2

संस्कृत अध्यापन कौशल विकास में नवीन तकनीक की भूमिका

उषा शुक्ला

शोधकर्ता द्वारा इस बात का अनुभव किया गया कि विद्यालयों में संस्कृत विषय का अध्यापन करने वाले शिक्षकों में से लगभग पचास प्रतिशत शिक्षक ऐसे हैं जिन्होंने केवल दसवीं या ग्यारहवीं तक तृतीय भाषा के रूप में संस्कृत का अध्ययन किया है और वे व्याकरण संबंधी संप्रत्ययों को समझाने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

ऐसी स्थिति में शोधकर्ता द्वारा संस्कृत विषय का अध्यापन करने वाले शिक्षकों को समर्थन देने की आवश्यकता महसूस की गई और विचार किया गया कि कतिपय शिक्षकों के समूह को एक धरातल पर जोड़ा जाए जहाँ वे एक-दूसरे से अपने अनुभव साझा करें तथा साथ ही साथ आवश्यकतानुसार विषय विशेषज्ञ द्वारा भी उन्हें मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके। आभासी दुनिया में भी यह सम्मेलन आयोजित कर कार्य-संपादन किया जा सकता है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए एक क्रियात्मक-अनुसंधान किया गया जिसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए।

भविष्य की अपार संभाव्यताओं को अपने क्रोड़ में समेटे एक नई सदी मानव समाज का अभिनंदन करने के लिए समुत्सुक है। शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक का विकास हमें भविष्य के लिए आशान्वित करता है, किंतु हमारी शालाओं की साधनहीनता हमें आशंकित भी करती है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी बच्चों का दिशादर्शन करते हुए एक आदर्श समाज की नींव रखी जाती है, भावी समाज नवीन तकनीक का आश्रय लेकर सर्वश्रेष्ठ बन सके यही हम सबका लक्ष्य है। प्रस्तुत अध्ययन में दो बिंदुओं पर विचार किया गया है—

- नवीन तकनीक और शिक्षक की भूमिका
- संभावनाओं को संभव बनाने की पहल।

सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ी साक्षरता के विकास हेतु मुक्त शैक्षिक स्रोतों का राष्ट्रीय कोष (एन.आर.ओ.ई.आर.) प्रारंभ किया गया है। सूचना प्रॉद्योगिकी, ई-पाठशाला विद्यालय शिक्षा और शिक्षक शिक्षा के सभी स्तरों पर सभी डिजिटल और डिजिटल योग्य संसाधनों को एक साथ एक मंच पर ला रही है।

नवीन तकनीक और शिक्षक की भूमिका

राष्ट्र के विद्यालयों में ही भावी-नागरिकों की रचना होती है। समय की माँग और परिस्थिति की चुनौतियों

**वरिष्ठ व्याख्याता*, डाइट, जबलपुर

© NCERT not to be republished

ने आज यह सिद्ध कर दिया है कि सुनहरे भावी कल के निर्माण का दारोमदार शिक्षकों पर ही है। तकनीक का प्रयोग वर्तमान युग की अनिवार्य बाध्यता है, क्योंकि शिक्षक की शैक्षिक एवं व्यावसायिक योग्यता की अल्पता/न्यूनता के साथ-साथ तकनीक की अज्ञानता उन्हें असफल सिद्ध कर सकती है। नवीन तकनीक से परिचित कराने की अनिवार्यता ही इस युग की सच्चाई है।

सत्य को संभाव्य करने की दिशा में शिक्षकों का सशक्तिकरण कितना एवं किस प्रकार हो; इसे एक नियोजित रणनीति बनाने के उपरांत ही समझा जा सकता है। सफल सतत-व्यावसायिक विकास के मॉडल तीन चरणों में विभाजित किए जा सकते हैं—

1. सेवापूर्व प्रशिक्षणों में दक्षता शिक्षाशास्त्र, विषय की दक्षता, प्रबंधन कौशल और विभिन्न शिक्षण उपकरणों (आई.सी.टी. द्वारा, एवं आई.सी.टी. के उपयोग सहित) का ज्ञान देना।
2. सेवाकालीन, संरचित, आमने-सामने तथा दूरस्थ शिक्षा के अवसर, सीधे शिक्षक की ज़रूरतों के लिए प्रासंगिक पाठ/उदाहरणों का निर्माण।
3. शिक्षकों के लिए सूचना व संप्रेषण तकनीक (आई.सी.टी.) द्वारा सक्षम सतत औपचारिक और अनौपचारिक शैक्षणिक और तकनीकी सहायता, दैनिक ज़रूरतों और चुनौतियों पर लक्षित करना।

यहाँ यह भी विशेष आवश्यक हो जाता है कि शिक्षकों का उन्मुखीकरण चूँकि नवीन तकनीक की दिशा में किया जा रहा है इसलिए इस उन्मुखीकरण के साधन भी तकनीक पर अवलंबित हों

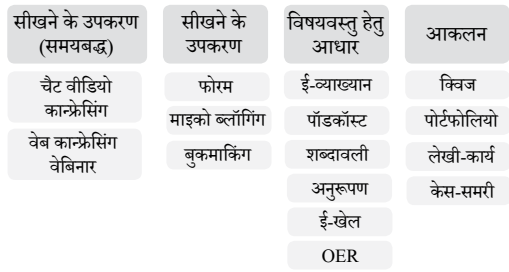

संभावनाओं को संभव बनाने की पहल

1. शैक्षिक तकनीकी, शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभाविता और पहुँच दोनों का विस्तार करती है, जैसे— मास मीडिया का उपयोग प्रशिक्षण एवं कक्षा अध्यापन की स्थिति में सुधार ला सकता है, इसके साथ ही आवश्यक संदर्भों का प्रचार एवं प्रसारण भी इससे संभव हो सकता है। सूचना संप्रेषण तकनीक कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावी बना सकती है।
2. भारत में प्रायोगिक रूप से मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा इलेक्ट्रॉनिक विभाग के सहयोग से 1983–84 में अध्ययन परियोजना कार्यक्रम का सूत्रपात किया गया, जिसके अंतर्गत 501 माध्यमिक एवं 248 उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया। इस परियोजना को सुचारु रूप से चलाने के लिए 10 संसाधन केंद्र एवं 3180 शिक्षक प्रशिक्षित किए गए।
3. टेलीकॉन्फ्रेंसिंग एवं वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के प्रयोग द्वारा राज्य एवं केंद्र सरकार के अनेक शिक्षा निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। शैक्षिक-उपग्रह (EDUSAT– Educational Satellite) एवं उपग्रह अनुदेशनात्मक दूरदर्शन कार्यक्रम (एस.आई.टी.ई.) कार्यक्रम भी इस क्षेत्र में उपादेय कहे जा सकते हैं।

© NCERT not to be republished

टैस-इंडिया द्वारा भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। विषयवस्तु आधारित मूक्स (MOOCS) का निर्माण शिक्षकों के उपयोग एवं मार्गदर्शन के लिए किया गया है। व्यावसायिक-शिक्षण-समुदाय (पी.एल.सी. PLC-Professional Learning Community) यद्यपि अभी पूर्वावस्था में है लेकिन सफल होने पर मील का पत्थर साबित हो सकता है।

राष्ट्र के सभी विद्यालयों को सूचना व संप्रेषण तकनीक (आईसीटी) से संपन्न बनाने का प्रयास किया जा रहा है। मुक्त शैक्षिक स्रोतों का राष्ट्रीय कोष (एन.आर.ओ.ई.आर.) और ई-पाठशाला इस दिशा के उल्लेखनीय कदम हैं। राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा कक्षाओं में आनंद की अनुभूति कराने के लिए पाठ तैयार किए गए थे और शिक्षकों को सुरक्षित डिजिटल कार्ड (एस.डी.कार्ड) एवं सूचना व संप्रेषण तकनीक (आईसीटी) भी उपलब्ध करवाई गई थी, ताकि शिक्षक मोबाइल का उपयोग कक्षाओं में कर सकें। लेकिन खेद की बात यह है कि आज की परिस्थिति में केवल 9 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा एस.डी. कार्ड का समुचित उपयोग किया जा रहा है।

एक लघु प्रयास

सुदूर गाँवों में अवस्थित विद्यालयों में तकनीक का माध्यम क्या हो? इस दिशा में यह शोध एक छोटा सा प्रयास प्रस्तुत है। प्रस्तुतकर्ता द्वारा कतिपय शिक्षकों के समूह को व्हाट्सएप के माध्यम से एक धरातल पर जोड़ा गया जहाँ वे एक-दूसरे से अपने अनुभव साझा करें तथा साथ ही साथ आवश्यकतानुसार विषय विशेषज्ञ द्वारा भी उन्हें मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके।

एक पूर्व नियोजित कार्यक्रम के साथ-साथ किया गया क्रियात्मक-अनुसंधान शोध प्रस्तुत है।

मोबिनार द्वारा संस्कृत अध्यापकों को समर्थन प्रदान करना

शोध के उद्देश्य

1. संस्कृत-अध्यापकों की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. संस्कृत-अध्यापकों की कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. मोबिनार के माध्यम से अध्यापकों के उन्मुखीकरण तथा कठिनाई-निराकरण का प्रयास करना।
4. निराकरण-रणनीति के प्रभाव का आकलन करना।

अध्ययन हेतु समष्टि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु ज़िले के 5 अध्यापकों एवं उनके विद्यार्थियों में से 10-10 विद्यार्थियों का यादृच्छिक रूप से चयन कर अध्ययन किया गया।

उपकरण-विवरण

1. अध्यापकों हेतु साक्षात्कार अनुसूची।
2. विद्यार्थियों हेतु पूर्व-परीक्षण और पश्च-परीक्षण।

प्रस्तुत क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिबिंबात्मक सिद्धांत पर अवलंबित है अर्थात यदि शिक्षकों की अवधारणाएँ स्पष्ट कर दी जाएँ तो उनकी कक्षा के विद्यार्थियों का स्तर स्वयमेव उत्तरोत्तर प्रगति कर सकता है। अवलोकन एवं साक्षात्कार से इतना तो स्पष्ट हो चुका था कि प्रत्यक्ष रूप से प्रशिक्षण प्रदान करना संभव नहीं है अतएव कोई ऐसा माध्यम उपयोग में लाया जाए जो प्रभावी हो तथा दोतरफा संप्रेषण में

© NCERT not to be republished

भी सक्षम हो। अध्यापकों की साक्षात्कार अनुसूची का विश्लेषण किया गया। 80 प्रतिशत शिक्षक तीनों कक्षाओं में जिन दो विषयों का अध्यापन करते हैं उनमें से एक विषय संस्कृत है। अध्यापन करते समय अधिकतर शिक्षक अनुवाद विधि का प्रयोग करते हैं। लगभग सभी शिक्षकों के द्वारा अध्यापन करते समय अधिकांश विद्यार्थी पाठ समझ जाते हैं। 80 प्रतिशत शिक्षक कक्षाओं में बच्चों की शंकाओं का समाधान नहीं कर पाते। सभी 80 प्रतिशत शिक्षक कक्षाओं में संस्कृत विषय का अध्यापन करते समय कठिनाई का अनुभव करते थे उनमें से 60 प्रतिशत शिक्षक संस्कृत व्याकरण के संबंध में मार्गदर्शन चाहते थे। पढने-पढानें के तरीके के संबंध में पूछे जाने पर 60 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा नए तरीके से (प्रशिक्षण के अतिरिक्त) मार्गदर्शन को पसंद किया गया। सभी विकल्पों के संबंध में गहराई से चिंतन किया गया। आवश्यकतानुसार सहकर्मी साथियों से भी विचार विमर्श किया गया।

शोधकर्ता द्वारा यह विचार किया गया कि सेमिनार एवं वेबिनार की तर्ज़ पर मोबिनार के उपयोग द्वारा शिक्षकों को समुचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाए तो सीमित व्यय में अतिरिक्त समय खर्च न करते हुए शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा सकता है। आपसी संवाद की कार्यावधि में उनकी कक्षा की तात्कालिक समस्याओं पर आपसी विचार-विमर्श किया जा सकता है, साथ ही साथ कुछ वीडियो आदि दृश्य माध्यम भेजकर उन्हें सामर्थ्यवान बनाया जा सकता है। वस्तुतः इस सबके मूल में यह विचारधारा थी कि ये अभिप्रेरित शिक्षक जब अपनी कक्षाओं में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदान करेंगे तो अपने आप विद्यार्थियों का निष्पादन-स्तर बढ़ेगा।

शिक्षकों द्वारा आंशिक रूप से मार्गदर्शन मांगा गया फिर भी विद्यार्थियों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गई। कतिपय प्रेरक वीडियो भी उपलब्ध कराए गए ताकि शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का रुझान संस्कृत भाषा की और बढ़ सके और साथ ही साथ समय-समय पर उनकी विषयवस्तु संबंधी कठिनाइयों का निराकरण किया जा सके।

शिक्षकों को उपलब्ध कराई गई सामग्री और विषयवस्तु

क्र.सं.	मोबिनार की तिथि	उपलब्ध कराई पाठ्य सामग्री	विषयवस्तु	प्रत्यक्ष मार्गदर्शन की तिथि
1	21/10/2017	संस्कृत अध्यापन के तरीके	जीवनोपयोगी वस्तुओं के संस्कृत नाम	24/10/2017
2	28/10/2017	संस्कृत अनुवाद के नियम	अनुवाद-प्रकरण	3/11/2017
3	11/11/2017	संधि-समास प्रकरण	पी.पी.टी. प्रस्तुति की सॉफ्ट कॉपी	------
4	18/11/2017	कृदंत प्रकरण	कृदंत-परिचय चार्ट	24/11/17
5	9/12/2017	प्रेरक वीडियो	पाठाधारित	21/12/2017

© NCERT not to be republished

समग्र कार्ययोजना 80 दिन की थी जिसमें शिक्षकों को मार्गदर्शन देने के साथ-साथ कक्षाध्यापन में प्रभाविता लाने हेतु आवश्यक सुझाव भी प्रदान किए गए। समग्र कार्ययोजना पूर्ण होने के उपरांत विद्यार्थियों का पश्च-परीक्षण लिया गया जो पूर्व-परीक्षण के समांतर प्रारूप पर अवलंबित था। प्रत्येक शाला के उन्हीं विद्यार्थियों पर परीक्षण का प्रशासन किया गया जो पूर्व-परीक्षण में सम्मिलित हुए थे।

विद्यार्थियों के संपूर्ण प्राप्तांकों की तुलना

शाला	पूर्व-परीक्षण	पश्च-परीक्षण
चेरीताल	11.50%	19.20%
दीक्षितपुरा	14.20%	17.40%
आरछा	12.50%	19.10%
नुनसर	11.10%	17.70%
पडरिया	11.80%	18.20%

निष्कर्ष

विद्यार्थियों के प्राप्तंकों की तुलनात्मक विवेचना से इस संदर्भ में निम्नलिखित तथ्य उजागर हुए हैं—

- शिक्षकों को मार्गदर्शन देने का सकारात्मक प्रभाव उनके विद्यार्थियों पर परिलक्षित होता है।
- सर्वाधिक न्यून 3.2 प्रतिशत अंकों की वृद्धि माध्यमिक शाला दीक्षितपुरा के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के प्रतिशत में हुई है।
- सर्वाधिक 7.7 प्रतिशत अंकों की वृद्धि माध्यमिक शाला चेरीताल के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों में हुई है।

विद्यार्थियों के प्राप्तांकों की तुलनात्मक विवेचना से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के प्राप्तांकों में 03 से 08 प्रतिशत वृद्धि हुई है। अर्थात् कहा जा सा सकता है कि मोबिनार के माध्यम से शिक्षकों की कठिनाइयों का निराकरण करने के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की उपलब्धि बढ़ी है।

अतएव प्रतिपादित होता है कि शिक्षकों को मार्गदर्शन देने के फलस्वरूप विद्यार्थियों की उपलब्धि में पर्याप्त वृद्धि हो सकती है।

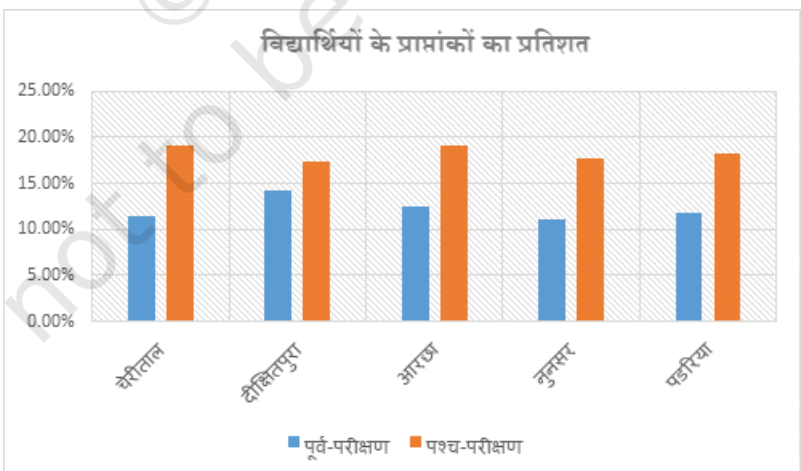

© NCERT not to be republished

संदर्भ

अग्रवाल, जे. सी. 1990. *राममूर्ति पॉलिसी ऑन एजुकेशन इन इंडिया*. डाबा हाउस, नयी दिल्ली.

भारत सरकार का राजपत्र. 2009. *निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली

मुखर्जी, रवींद्रनाथ. 1992. *सामाजिक शोध व सांख्यिकी*. विवेक प्रकाशन, नयी दिल्ली.

योगेंद्रजीत भाई. *शिक्षा में नवाचार एवं नवीन प्रवृत्तियाँ*. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

रा.शै.अ.प्र.प. 2004. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

शर्मा, परमेश्वरदयाल. 2012. *सामाजिक शोध व सांख्यिकी*. पैसिफ़िक पब्लिकेशन, नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished